

## जानवर दोस्त हैं, भोजन नहीं

क्री लोगों की एक पुरानी शिक्षाएँ हैं: लोग हल्के-फुल्के ढंग से मूस (हिरण) का शिकार नहीं करते। मूस केवल वास्तविक ज़रूरत के समय में ही खुद को लोगों को सौंपता है। यह कहानी केवल एक किंवदंती नहीं है - यह एक निर्देश है। यह हमें बताती है कि जानवरों को हमारी इच्छा से लेना हमारा अधिकार नहीं है। वे हमारे रिश्तेदार हैं। जब वे अपनी जान देते हैं, तो यह एक उपहार है। और उपहारों के लिए कृतज्ञता, विनम्रता और संयम की आवश्यकता होती है।

मानव इतिहास ने एक समय इसे समझा था। सदियों तक, मांस रोज़मरा का हक नहीं था। जब लोग कृषि जीवन में बस गए, तो जानवर जीवित रहने में साथी थे: वे दूध, अंडे और श्रम देते थे। उनकी जान को छोड़ दिया जाता था, सिवाय सबसे कठिन सर्दियों के या उन दुर्लभ उत्सवों के, जब समुदाय को भोज की आवश्यकता होती थी। मांस दुर्लभ था, और इसलिए पवित्र। इसे खाना बलिदान के वजन को सम्मान देने का मतलब था।

लेकिन हम भटक गए। जैसे-जैसे धन बढ़ा, मांस बदल गया। यह सामाजिक हैसियत का प्रतीक बन गया, एक वस्तु, शक्ति प्रदर्शित करने का तरीका। यह अब दुर्लभ नहीं रहा, बल्कि रोज़मरा की चीज़ बन गया। फिर भी, असहमति हमेशा मौजूद रही। यूरोप के पुनर्जनन के चरम पर भी, लियोनार्डो दा विंची ने घोषणा की कि वह अपने शरीर को “जानवरों के शर्वों का मकबरा” नहीं बनाएंगे। उनकी अस्वीकृति केवल एक सनक नहीं थी; यह एक नैतिक रुख था। उन्होंने वह देखा जो दूसरों ने नज़रअंदाज़ किया: कि हल्के ढंग से ली गई जान एक अनादर की गई जान है।

अन्य परंपराएँ भी इस सत्य को लेकर चलीं। बौद्ध धर्म ने मानवीय आचरण के केंद्र में करुणा को रखा - न केवल लोगों के लिए, बल्कि सभी संवेदनशील प्राणियों के लिए। किसी जानवर को खाना मतलब पीड़ा को बढ़ाना, खुद को और अधिक नुकसान से बांधना। इससे परहेज करना **अहिंसा** का अभ्यास है, कार्य में अहिंसा। यह शिक्षाएँ क्री की कहानी के साथ संनादति हैं: जीवन को कभी भी बिना सोचे-समझे नहीं लेना चाहिए।

आधुनिक दुनिया ने इस बुद्धिमत्ता को काफी हद तक त्याग दिया है। महामंदी और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, लोगों ने एक बार फिर मांस को कीमती माना, इसे राशन किया गया, कभी बर्बाद नहीं किया गया। लेकिन युद्ध समाप्त होने के बाद, भूख की जगह प्रचुरता ने ले ली, और संयम ने लालच का रास्ता दे दिया। मांस की खपत में उछाल आया। व्यंजन भारी हो गए, अर्थव्यवस्थाएँ औद्योगिक हो गई, और जानवरों ने अपनी आखिरी गरिमा खो दी। वे अब “खुद को नहीं देते थे।” वे निर्मित किए गए, गुणा किए गए, और अकल्पनीय पैमाने पर वध किए गए।

संविदा टूट गई। सम्मान घुल गया। मनुष्यों और जानवरों के बीच का बंधन शोषण में ढह गया।

इसलिए मैं शाकाहारी हूँ। यह फैशन या चलन के बारे में नहीं है। यह नैतिकता के बारे में है। यह उन आवाज़ों को सुनने के बारे में है जो हमें याद दिलाती हैं - क्री का बुजुर्ग, पुनर्जनन का कलाकार, बौद्ध भिक्षु - कि जानवर वस्तुएँ नहीं, बल्कि साथी हैं। अगर मुझे किसी की जान लेने की ज़रूरत नहीं है, तो मैं इनकार करता हूँ। मेरा शरीर मकबरा नहीं होगा।

जानवर दोस्त हैं, भोजन नहीं। इस सत्य के साथ जीना मतलब खोए हुए सम्मान को पुनर्स्थापित करना है। यह उन लोगों की बुद्धिमत्ता का सम्मान करना है जो हमसे पहले आए। यह उस उद्योग को अस्वीकार करना है जो पीड़ा पर आधारित है। और यह उस भविष्य के लिए खड़ा होना है जहाँ मूस अभी भी स्वतंत्र रूप से चलता है, जहाँ उसका उपहार दुर्लभ और पवित्र है, न कि रोज़मरा का और दुरुपयोग किया हुआ।